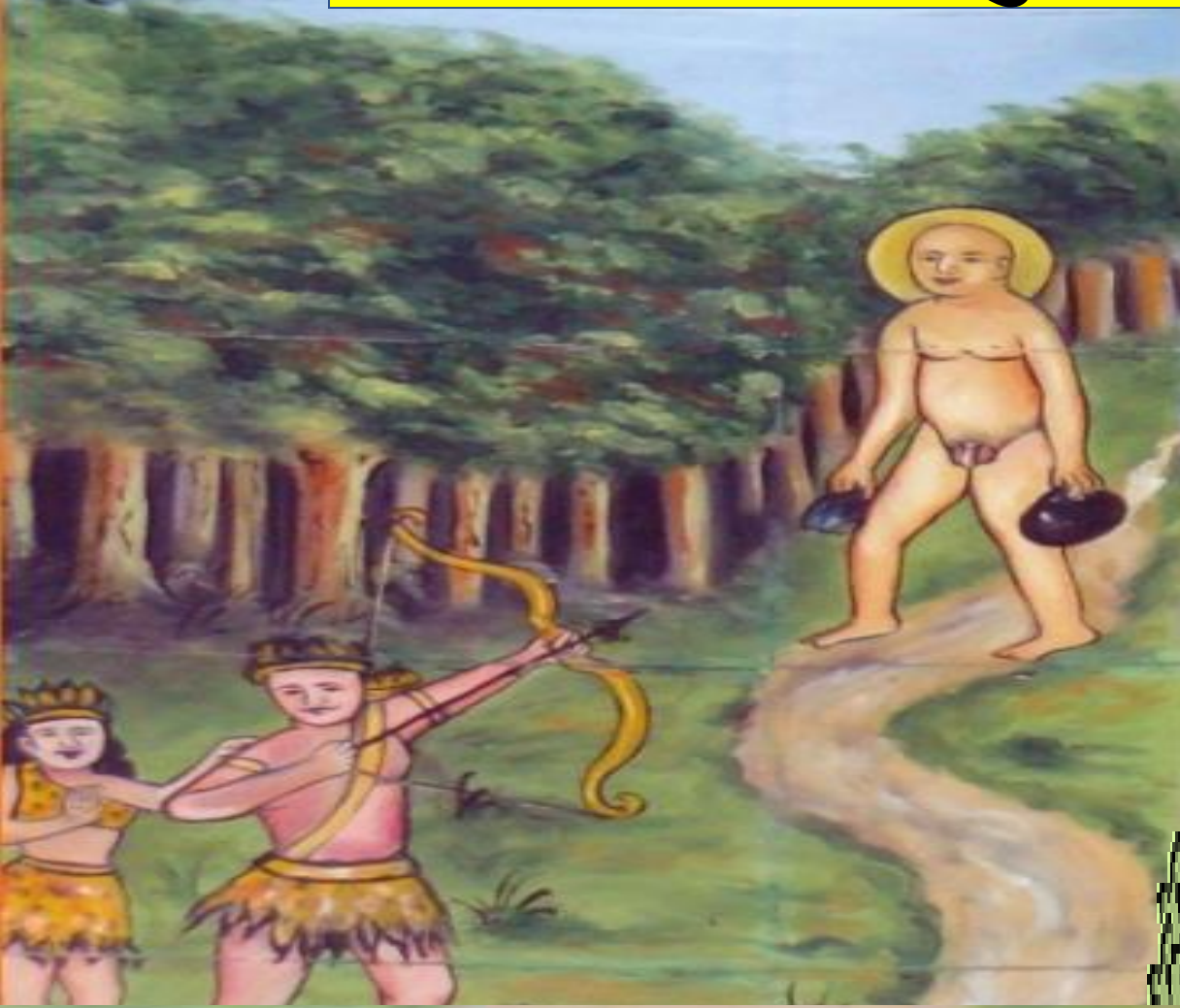


भगवान महावीर : पूर्वभव वर्णन



परुरवा
भील

विदेह क्षेत्र की पुंडरीकिणी नगरी का मधुवन



पुरुषवा भीम मुनि को मारना चाहता था, पत्नी के मना करने से गुरु के उपदेश से मद्य, मांस, मधु का त्याग कर प्रथम स्वर्ग में देव हो गया ।



सौधर्म स्वर्ग में देव

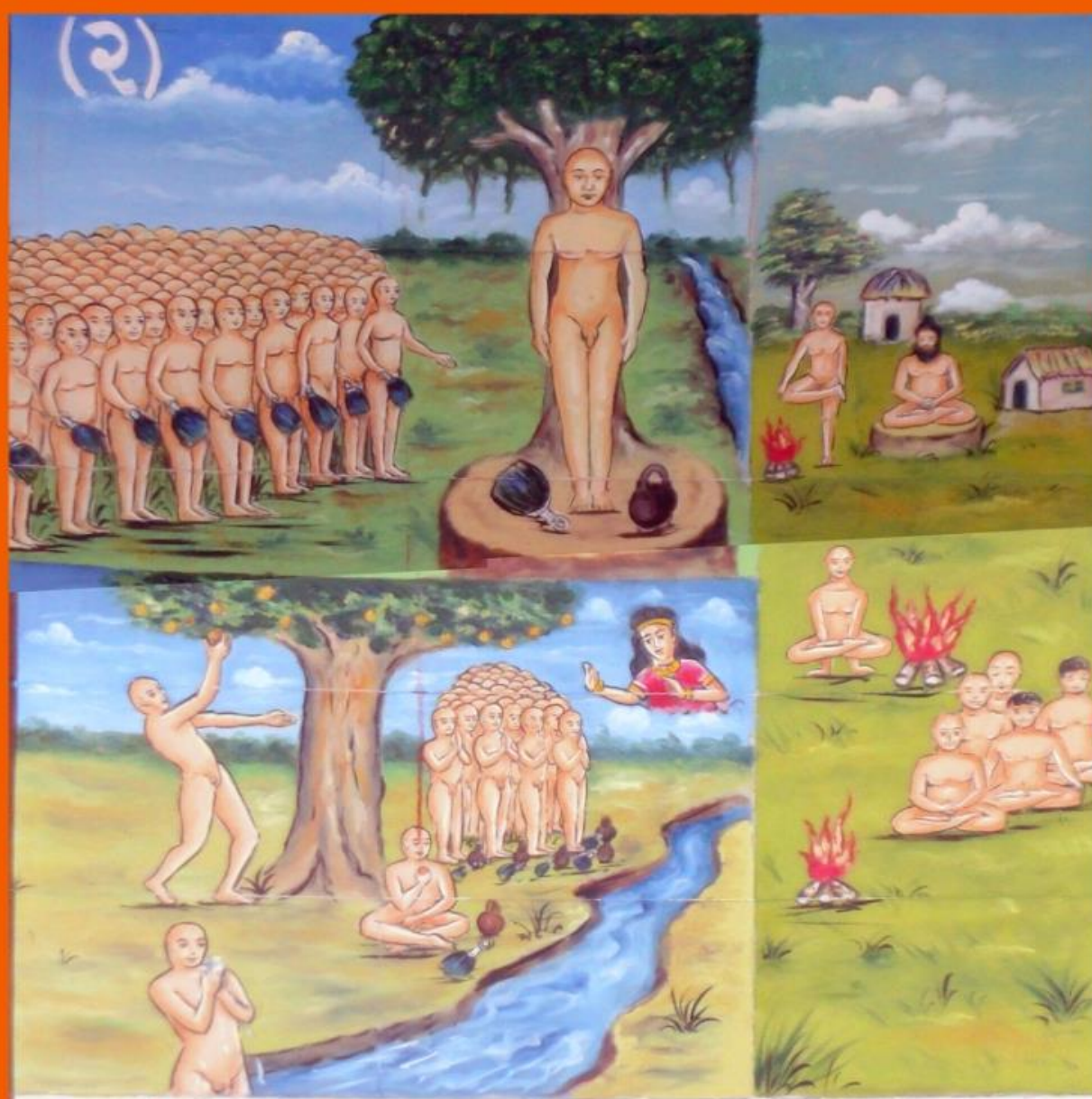
मरीचि

(ऋषभदेव का पौत्र)

पिता – भरत चक्रवर्ती



(२)



स्वर्ग से च्युत होकर भरत चक्री का पुत्र मरीचिकुमार हो गया। पितामह प्रभु ऋषभदेव के साथ दीक्षित हो मार्ग से च्युत होकर मिथ्यात्व के प्रचार में अग्रणी हो गया।

भगवान आदिनाथ का समवशरण



ऋषभदेव- हे भरत, यह तेरा पुत्र मरीचि इस भारत क्षेत्र में अंतिम तीर्थकर महावीर होगा।



ब्राह्मण

देव

ब्राह्मण

देव

ब्राह्मण

देव

ब्राह्मण

देव

ब्राह्मण

देव

पांचवे स्वर्ग में
देव

एकेन्द्रियादि पर्यायों
में असंख्य भव



ब्राह्मण



पांचवे स्वर्ग में देव





विश्वनंदी
राजकुमार

नन्दविशाख को अपने उद्यान में देख क्रोधित विश्वनन्दि



क्रोधवश बंधा निदान

अपने तप के प्रभाव
से मैं तेरा सर्वनाश
कर दूँगा

हा हा हा...
रे! विश्वनंदी, कहाँ
गया तेरा बल?





दसवें स्वर्ग में देव

त्रिपृष्ठ नारायण



क्रूर सिंह को मारता त्रिपृष्ठ



त्रिपृष्ठ(वासुदेव) और अश्वग्रीव(प्रतिवासुदेव)
में युद्ध



त्रिपृष्ठ(वासुदेव) ने अश्वग्रीव के चक्र से उसी पर प्रहार कर उसे मार गिराया।





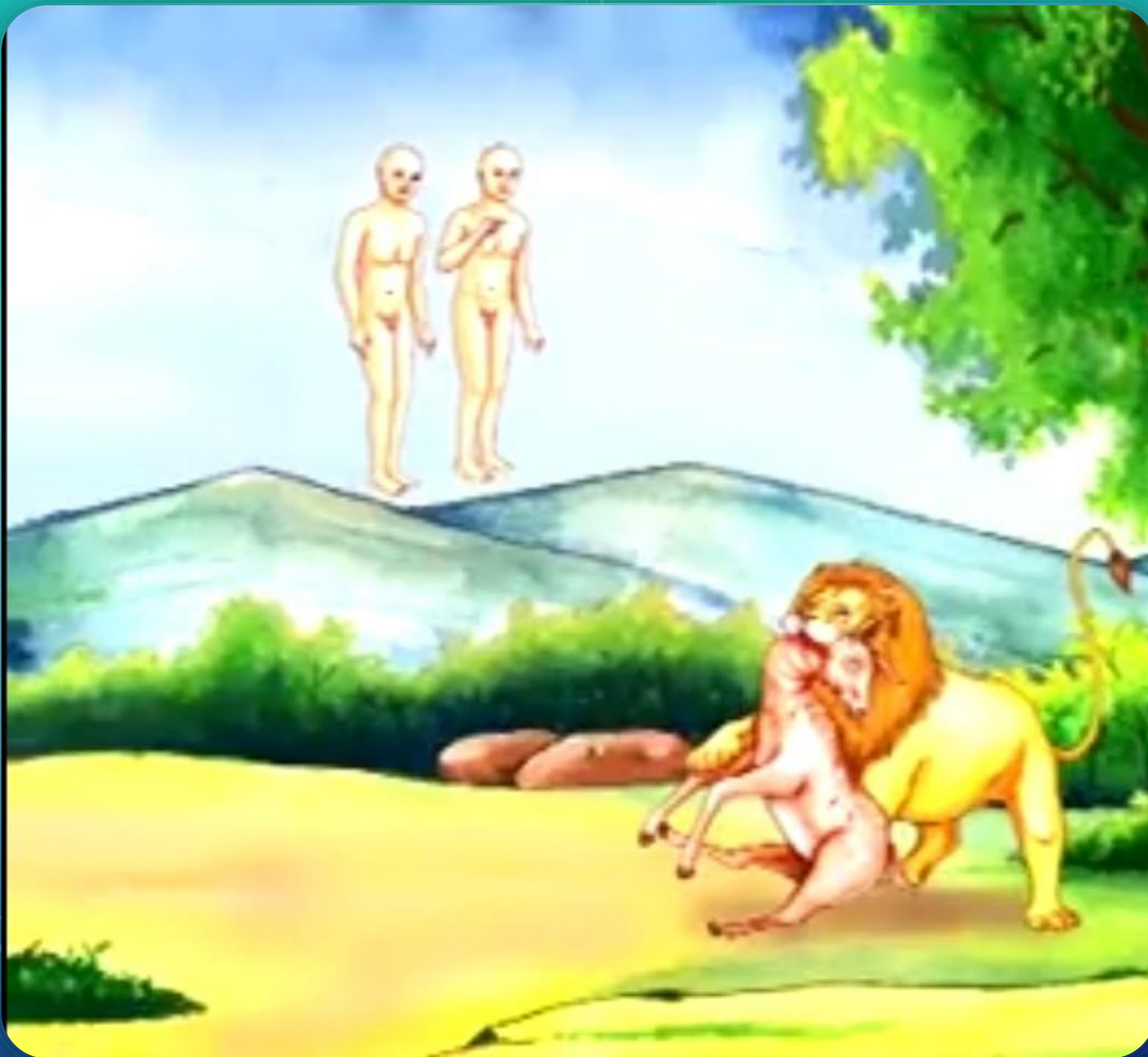
सातवें नरक
का नारकी



सिंह (शेर)



नरक का
नारकी



सिंह
(शेर)

अमितकीर्ति और अमितप्रभ मुनिराज

मुनि- अरे वनराज, अब इस मिथ्याबुद्धि को छोड़ो और आत्मज्ञान करो ।

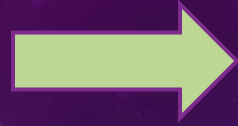


मुनिराजों द्वारा संबोधन करने पर सिंह को सम्यग्दर्शन हुआ





सौधर्म स्वर्ग में
देव



राजा

देव

राजा

देव

चक्रवर्ती

देव



नंद राजा



**प्रौष्ठिल आचार्य से ग्यारह अंगों का ज्ञान प्राप्त कर सोलहकारण भावना
भाकर तीर्थकर प्रकृति बांधते है।**





सोलहवें स्वर्ग में देव



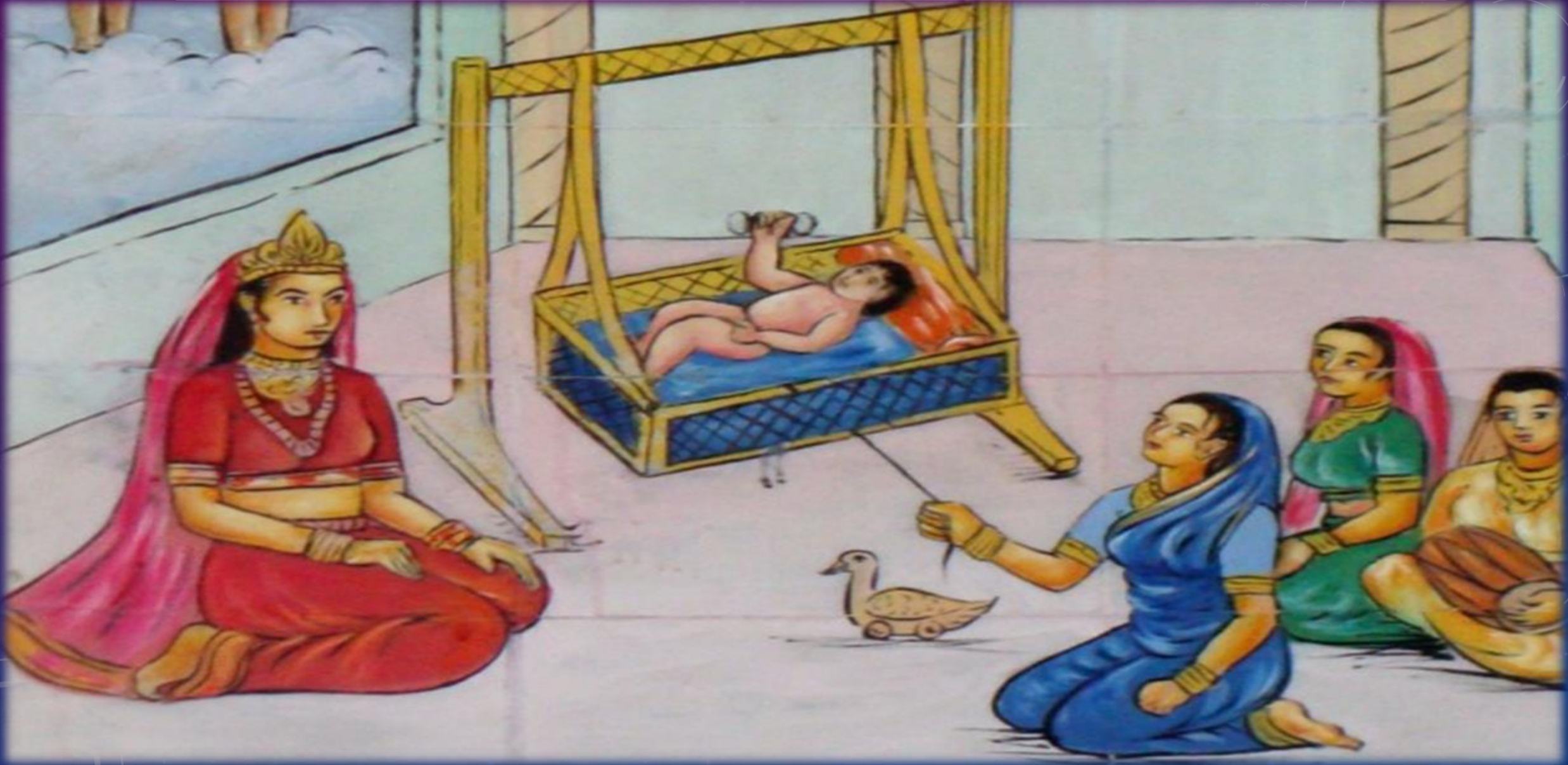
भगवान महावीर

वैशाली में माता त्रिशला के गर्भ में बालक वर्धमान





माता-पिता एवं प्रजाजनों ने “वर्धमान” नाम रखा।



तीर्थंकर शिशु के दर्शन से मुनियों की शंका का समाधान हुआ, उन्होंने प्रभु का
"सन्मति" नाम रखा



संगम देव द्वारा नाम – “महावीर”



भगवान महावीर के जन्मकल्याणक महोत्सव की जय

